

मानवतावादी सिद्धान्त मूलतः फ्रायड के सिद्धान्त के प्रत्यक्ष में विकसित किया गया। कार्ल रोजर्स एवं अब्राहम मैसलो ने व्यक्तित्व सम्बन्धी मानवतावादी परिप्रेक्ष्य के विकास में विशेष रूप से योगदान दिया है। रोजर्स ने स्व सिद्धान्त के दृष्टिकोण से स्पष्ट किया है। रोजर्स द्वारा प्रस्तावित सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचार एक पूर्णतः प्रकाशहीन व्यक्ति का है। उनके अनुसार व्यक्तित्व का विकसित करने के लिए सन्तुष्टि, अभिप्रेक्ष्य आवश्यक है। प्रायः लोग अपनी सम्भावनाओं, कामनाओं एवं परिभाषाओं को उत्कृष्ट ढंग से अभिव्यक्त करने का प्रयत्न करते हैं। व्यक्तित्व में सहज प्रवृत्ति होने के कारण उन्हें अपनी वंशानुगत प्रकृति की सिद्धि आपादि के लिए निर्दिष्ट करती है।

मानव व्यवहार के सम्बन्ध में रोजर्स ने दो आधारभूत अभिप्रेक्षा का निर्माण किया। पहला व्यवहार सार्थक एवं लक्ष्योन्मुख होता है तथा दूसरा व्यवहार सदैव अनुकूल एवं आत्मसिद्धि वाला होता है। उनका सिद्धान्त रोगियों द्वारा सुनते हुए प्राप्त अनुभवों के आधार पर विकसित हुआ है। उन्होंने इस तथ्य पर प्रकाश डाला, कि उनके रोगियों के अनुभव में आत्म एक महत्वपूर्ण तत्व था। उनके सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति अपनी वास्तविक आत्म सिद्धि, अथवा प्राप्ति की प्रक्रिया में प्रयासरत रहता है। जब वास्तविक आत्म एवं आदर्श आत्म के मध्य समानता होती है तब मनुष्य सामान्य गौर पर प्रसन्न रहता है।

एक आदर्श आत्म वह होता है जैसा कि एक व्यक्ति बनना तथा होना चाहता है। पुरुष दोनों ही आत्म के मध्य विद्यमान के कारण सदैव असन्तोष तथा अपसन्ना की भावनाएं उत्पन्न होती हैं।

श्रीजस के एक आध्यात्मिक सिद्धान्त के अनुसार लोगों में आत्मविद्धि के माध्यम से आत्म-संप्रत्यय को अधिकतम सीमा तक विकसित करने की प्रवृत्ति होती है। इसके अनुसार व्यक्तिव्य का विकास एक सतत प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है जिसमें अपने आपका मलमोक्षण करने का कार्यक्रम और आत्मविद्धि की प्रक्रिया में प्रकीर्णता शामिल होती है। आत्म-संप्रत्यय को विकसित करने में सामाजिक प्रभावों की भूमिका अहम होती है। आत्म-संप्रत्यय एवं आत्म-सम्मान तब उच्च होता है जब सामाजिक दृष्टांत अनुकूल होती है। दूसरी ओर आत्म-संप्रत्यय एवं आत्म-सम्मान तब निम्न होता है जब सामाजिक दृष्टांत प्रतिकूल होती है। ऐसे लोग जिनका आत्म-संप्रत्यय और आत्म-सम्मान ऊंचा होता है वे सामान्य तौर पर तब अनुभवों को संतुष्टाई से ग्रहण कर लेते हैं जिससे कि अपने विकास और आत्म-विद्धि को और उन्मुख रहे।

मैल्को के आत्मविद्धि की-
उपलब्धि या प्राप्ति के रूप में मनोवैज्ञानिक

रूप से स्वस्थ व्यक्ति का विस्तृत व्याख्यान
किया है। आत्मसिद्धि एक ऐसी अवस्था होती
है जिसके द्वारा लोग अपनी सम्पूर्ण संभाव्यताओं
का विकास कर चुके होते हैं। मैं स्वामी ने मानव
का एक संकाशालय और आशावादी दृष्टिकोण
निर्मित किया है जिनके अन्तर्गत मानव में
स्नेह, हर्ष एवं सृजनसमक कार्यों को करने की
संभावना होती है। मानव अपने जीवन को
आकाश क्षेत्र में तथा आत्मसिद्धि पाने में स्वतंत्र
माने गाए है। जैसा कि हम सभी जानते हैं
कि जैविक, सरका तथा आत्मीयता की आवश्यकताएँ
मनुष्यों एवं पशुओं दोनों में ही पाई जाती हैं।
अतः किसी व्यक्ति का केवल इन आवश्यकताओं
की ओर ध्यान देना पशुओं के स्तर पर ही
आता है। मानव जीवन आत्म-सम्मान और
आत्मसिद्धि के आधार से ही प्रारम्भ होता है।
मानवतावादी उपागम जीवन के संकाशालय
पक्षों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं।

Next day

Hrishikesh Lal,
Deptt - psychology

B.M.C. Rahi Kq.